अखंड दंडवत करूं परणाम, हैडे भीडी ने भाजूं हाम।
प्रेमे दउं प्रदखिणा, फरी फरी वली अति घणा।। १ ।।

हे श्री राजजी! आपके चरणों में अखण्ड दण्डवत प्रणाम करूं और अपने हृदय से लगाकर चाहना मिटाऊं। अति प्रेम से बार-बार आपकी परिक्रमा करूं।

वारी वारी जाऊं मुखारने विंद, वरणवुं सोभा सरूप सनंध।
वारणा लऊं आंखडियो तणा, सीतल द्रष्ट माहें नहीं मणा।। २ ।।

आपके मुखारबिन्द पर मैं बलिहारी जाती हूं। आपके सुन्दर स्वरूप का वर्णन करती हूं। आपकी आंखों पर बलिहारी जाती हूं। इनकी शीतल नजर में कमी नहीं है।

भामणा ऊपर लउं भामणा, सुख अमने दीधां अति घणा।
वली वली लागूं चरणे, सेवा करीस हूं वालपण घणे।। ३ ।।

आपने हमको अनगिनत सुख दिए हैं, इसलिए बार-बार बलिहारी जाती हूं। बार-बार चरणों में प्रणाम करती हूं। प्यार से आपकी सेवा करूंगी।

वारी फरी नाखूं मारी देह, इंद्रावती वली वली एम कहे।
अति वखाण में थाय नहीं, पोताना घरनी वातज थई।। ४ ।।

श्री इन्द्रावतीजी बार-बार कहती हैं कि मैं अपने तन को आप पर कुर्बान कर दूं। इससे अधिक और बार-बार मैं क्या कहूं? यह तो अपने घर की बात है।

पोते पोताना करे वखाण, तेहेने सहु कोई कहे अजाण।
पण जेवडी वात तेहेवा वखाण, वचन ग्रहसे जोईने जाण।। ५ ।।

अपने मुंह जो अपनी प्रशंसा करता है, उसे सब कोई अज्ञानी (मूर्ख) कहते हैं, परन्तु जैसा हो वैसा ही वर्णन जानकर लोग उन वचनों से हकीकत जान जाते हैं।

श्री धणीतणा वचन प्रमाण, प्रगट लीला थासे निरवाण।
चौद भवननो कहिए भाण, रास प्रकास उदे थया जाण।। ६ ।।

श्री धाम धनी के वचनों के प्रमाण से अब यह लीला सब में जाहिर होगी। सूर्य की तरह चौदह भुवनों (लोकों) में रास और प्रकाश का ज्ञान फैल जाएगा।

चौद भवननो नहीं आसरो, उदेकार अति घणो थयो।
सब्दातीत ब्रह्मांड कीधां प्रकास, ए अजवालूं जोसे साथ।। ७ ।।

आपके ज्ञान से इतनी अधिक जानकारी हो गई है कि अब हमें चौदह लोकों के देवी-देवताओं या किसी के सहारे की जरूरत नहीं है। आपका ज्ञान शब्दातीत है। यह चौदह लोकों में फैल रहा है। उस उजाले को सुन्दरसाथ देखेगा।

प्रकास तणा वचन निरधार, जे जोईने करसे विचार।
आगल ए थासे विस्तार, जीव घणा उतरसे पार।। ८ ।।

जो कोई विचार करके देखे तो प्रकाश के वचन सत्य हैं (अटल हैं)। इनका आगे विस्तार होगा और इसके द्वारा बहुत से जीव भवसागर से पार उतरेंगे।

Nijanand App

ए लीला जे जोसे विचार, सूं करसे तेहेने संसार।
प्रगट पाइयो कीधो एह, अंबारत थासे हवे तेह।। ९ ।।

इस लीला को जो विचार करके देखेगा, उसका संसार क्या बिगाड़ सकता है? आपने ऐसी मजबूत नींव रखी है कि इसके ऊपर बहुत बड़ा भवन बनेगा।

हवे सुणजो सहुए साथ, चरणे तमने लागे मेहेराज।
ए वाणी श्री धणिए कही, वली वली तमने कृपा थई।। १० ।।

हे सुन्दरसाथजी! सुनो, श्री मेहराज तुम्हारे चरणों में प्रणाम कर कहते हैं कि यह वाणी धनी ने कही है और तुम्हारे ऊपर फिर से कृपा हुई है।

एहेवो पकव प्रवीण नथी कांई हूं, तो सिखामण तमने केम दऊं।
हूं घणुए एम जाणूं सही, जे जीव मारूं समझावुं रही।। ११ ।।

मैं इतना पक्का ज्ञानी नहीं हूं। आपको शिक्षा कैसे दूं? मैं यह अच्छी तरह जानती हूं कि यह बात मुझे हृदय में रखनी है।

पण धणी तणी कृपा अति घणी, वली वली दया करे साथ तणी।
तो वचन तमने केहेवाय, नहीं तो कीडी मुख कोहलूं न समाय।। १२ ।।

धनी की कृपा अत्यधिक है। वह सुन्दरसाथ के ऊपर बार-बार दया करते हैं। यह वचन स्वयं तुमको कह रहे हैं। नहीं तो चींटी के मुख में कुम्हड़ा (पेठा) नहीं समाता। (मेहराज चींटी के समान और धनी की कृपा कुम्हड़े के समान है)।

हवे रखे वचन विसारो एक, साथ माटे कह्या विसेक।
वचन कह्या छे करजो तेम, आपण पेहेलां पगला भरियां जेम।। १३ ।।

हे सुन्दरसाथजी! अब धनी के एक वचन को भी मत भूलो। यह वचन धनी ने विशेषकर सुन्दरसाथ के लिए ही कहे हैं। जैसे वचन धनी ने कहे हैं, वैसे ही रहनी में आना। ब्रज से रास को जाते समय जो रास्ता चलकर बताया था उसी के मुताबिक चलना।

वली अवसर आव्यो छे हाथ, चरणे लागीने कहूं छूं साथ।
हवे चरणे लागूं श्रीवालाजी, तमे वहार मारी भली कीधी।। १४ ।।

श्री इन्द्रावतीजी साथ के चरणों में लगकर कहती हैं कि अब फिर से अवसर हाथ आया है। अब वालाजी के चरणों में विनती करती हूं कि हे वालाजी! आपने भलीभांति हमारी सुध ली।

आ माया घणूं जोरावर हती, पण हलवी थई मारा धणी तम थकी।
मायाने तजारक थई, ते ऊपर आ विनती कही।। १५ ।।

यह माया बड़ी ताकत वाली थी, किन्तु आपकी कृपा लेकर मेरे लिए हल्की (सुगम-सरल) हो गई। मैंने माया को ठोकर मारकर हटा दिया। इसलिए यह विनती की है (आपका धन्यवाद किया है)।

ते विनतडी जोजो सार, माया दुख पामी निरधार।
धणी लिए तेम लीधी सार, मुख मांहेंथी काढी आधार।। १६ ।।

इस विनती के सार को आप देखें। माया ने हमको बहुत ही दुःखी किया है। आपने एक पति की तरह हमारी सार (सुध) ली और माया के मुख में से आपने हमें निकाला।

Nijanand App

तमारा गुणनी केही कहूं वात, तमे अनेक विधे कीधी विख्यात।
पोतावट जाणी प्रमाण, इंद्रावती चरणे राखी निरवाण।। १७ ।।

आपके ऐसे गुणों की (मेहरबानियों की) मैं क्या बात कहूं? आपने अनेक तरह से भलाइयां की हैं और अपनी अंगना जानकर निश्चित रूप से इन्द्रावती को चरणों में रखा है।

चरण पसाय सुंदरबाईने करी, फल वस्त आवी रदे चढी।
चरण फल्या निध आवी एह, हवे नहीं मूकूं चित चरण सनेह।। १८ ।।

श्री श्यामाजी (सुन्दरबाई) की कृपा से यह पूर्ण ज्ञान हृदय में आ गया। आपके चरणों की कृपा से यह न्यामत आई है, इसलिए बड़े प्यार से इन चरणों को कभी नहीं छोड़ूंगी।

चरण तले कीधुं निवास, इंद्रावती गाए प्रकास।
भाजी भरम कीधो अजवास, पामे फल कारण विस्वास।। १९ ।।

श्री इन्द्रावतीजी आपके चरणों का आसरा लेकर, वाणी का प्रकाश कर रही हैं। संशय मिटाकर ज्ञान का उजाला कर दिया, जिस विश्वास के कारण यह फल उन्हें मिला है।

विस्वास करीने दोडे जेह, तारतमनूं फल लेसे तेह।
ते माटे कहूं प्रकास, जोपे जागी लेजो साथ।। २० ।।

जो विश्वास करके दौड़ता है, तारतम (अपने धनी की मेहर) का फल वही पाता है। इसलिए मैंने प्रकाश का वर्णन किया है। सुन्दरसाथजी इसे ग्रहण कर जाग जाना।

एटले पूरण थयो रास, इंद्रावती धणीने पास।
मूने मारे धणिए दीधी बुध, हवे प्रकास करूं तारतमनी निध।। २१ ।।

इतने में रास की लीला पूरी करके श्री इन्द्रावतीजी धनी के पास पहुंचीं और कहती हैं कि मुझे मेरे धनी ने जागृत बुद्धि दी है। अब उससे तारतम की निधि को संसार में प्रकाशित करूं?

।। प्रकरण ।। १९ ।। चौपाई ।। ४१० ।।

हवे प्रकास उपनो छे

हवे करूं ते अस्तुत आधार, वल्लभ सुणो विनती।
आटला दिवस में नव ओलख्या मारा वालैया, मायानी लेहेर मूने जोर हती।। १ ।।

हे मेरे प्रीतम! मेरी विनती सुनो। मैं आपकी वन्दना करती हूं। मैं माया की लहर में डूबी थी और मैंने इतने दिन तक अपने प्रीतम को नहीं पहचाना।

जीव जगावी भाजी भरम, श्री वालाजीने लागूं पाए।
सोभा तमारी तीत सब्द थकी, मारी देह आ जिभ्या सब्द मांहें।। २ ।।

अपने संशय मिटाकर जीव को जगाऊं और आपके चरणों में प्रणाम करूं। हे वालाजी! आपकी शोभा शब्दातीत (पार की) है और मेरा तन और जुबान माया की है।

केणी पेरे हूं करूं अस्तुत, मारा जीवने नथी कांई बल।
मारी जोगवाई सर्वे अस्थिर वस्तनी, केम वरणवुं सोभा नेहेचल।। ३ ।।

हे धनी! मैं किस तरह से आपकी वन्दना करूं? मेरे जीव में इतना बल नहीं है। मेरा तन संसार का मिटने वाला है। आपकी शोभा अखण्ड है, उसका वर्णन कैसे करूं?

Nijanand App